बैंकिंग सखी कॉरस्पोंडेंट यानी बैंक आपके द्वार

बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी (बीसी सखी) मॉडल के जरिये झारखंड के दूर-दराज समेत तमाम ग्रामीण इलाकों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने का प्रयास अब रंग ला रहा है. झारखंड में इस मॉडल को ग्रामीण विकास विभाग के तहत झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है. दीनदयाल अंत्योदय योजना- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एवं झारखंड ग्रामीण बैंक के संयुक्त प्रयास से सखी मंडलों से महिलाओं को चुन कर उनको प्रशिक्षण उपलब्ध कराते हुए बीसी सखी के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है. वर्तमान में करीब 100 बीसी सखियां विभिन्न ग्रामीण इलाकों में काम कर रही है. सखी मंडल की बहनें एक ओर जहां इस पहल से अपनी आय को बढ़ा रही है, वहीं सुदूर गांवों के आखिरी परिवार तक को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने का कार्य भी बखूबी कर रही है.

कुमार विकास

ग्रामीण महिलाओं का बैंक खाता खोलतीं बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी.

बैंकिग कॉरस्पोंडेंट सखी के रूप में सखी मंडल की महिलाएं गांवों में कम नकदी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ-साथ वित्तीय समावेशन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. ये महिलाएं पीओएस मशीन के जरिये ग्रामीण परिवारों को गांव में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करा रही है. बीसी सखी के जरिये सखी मंडल एवं अन्य संगठन भी डिजिटल माध्यम एवं डूअल सत्यापन के द्वारा घर बैठे लेन-देन एवं फंड ट्रांसफर कर रही है.

सखी मंडल से संवरती गांवों में बैंकिंग

बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी बैंकिंग की नयी परिभाषा गढ़ रही है. कल तक जिन ग्रामीण गरीब परिवारों ने बैंक देखा तक नहीं था, वो भी अब बैंकिंग सेवाओं से जुड़ रहे हैं. बीसी सखी की जीवंत कार्यशैली के कारण बैंक अब ग्रामीण परिवारों के चौखट तक पहुंच रहा है और लोग कम नकदी अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहे हैं. वर्तमान में यह पहल झारखंड ग्रामीण बैंक, को-ऑपरेटिव बैंक और बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से चल रहा है. झारखंड के हजारों ऐसे गांव जहां से लोग बैंक काफी दूर होने की वजह से नहीं जाते थे, वहां ये बीसी सखी लाखों का ट्रांजेक्शन कर रही है. यही नहीं 'बैंकिंग आपके घर' की तर्ज पर ये बीसी सखी गांव में ही लोगों को मनरेगा की मजदूरी, बुजुर्गों को वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, खाता खोलने एवं लेन-देन की सुविधा उपलब्ध कराती है. दर्जनों ऐसी बीसी सखी हैं, जो हर महीने लाखों का ट्रांजेक्शन कर रही है.

बैंकिंग कॉरेस्पोंडेंट सखी की संख्या

जनवरी	35	मार्च	50	मई	70
फरवरी	44	अप्रैल	60	जून	75

केस स्टडी

गुमला के रायडीह प्रखंड के सुरसिंह गांव की बैंक सखी रूक्मणी देवी ने सिर्फ जून माह में करीब 16,64,000 का ट्रांजेक्शन अपने आस-पास के गांवों में किया. खूंटी के सुदूर पिछड़ा प्रखंड रनिया के जयपुर गांव की गायत्री देवी ने 8,29,750 रुपये का ट्रांजेक्शन किया है. वहीं, राजधानी रांची के अनगड़ा प्रखंड के जोन्हा गांव की बरखा रानी कच्छप ने अकेले जून माह में 1,82,000 रुपये से ज्यादा का लेन-देन किया. सिर्फ लेन-देन ही नहीं, बल्कि बैंक से अब तक नहीं जुड़ सके लोगों के लिए भी बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी वरदान साबित हो रही है. गुमला के घाघरा प्रखंड की अमृता देवी ने 528 ग्रामीण लोगों का खाता खोल चुकी है. छह महीने के छोटे से समय में गांव की इन बैंकवाली दीदीयों ने 10,314 नये लोगों का खाता खोल कर बैंकों से जोड़ा. वहीं, कुल 72.5 लाख से ज्यादा रुपये बैंक खातों में जमा करा चुकी हैं. गांव की असल जरूरतों को ध्यान में रखते हुए छात्रवृत्ति के करीब 3.5 लाख रुपये गांव के युवाओं में वितरित करने का काम इनके माध्यम से किया गया है.

सुदूर गांवों तक पहुंचती बैंकिंग सुविधा

झारखंड के एक बड़े भूभाग में पहाड़ों और जंगलों की अधिकता है. यही वजह है कि सुदूर इलाकों में बसे गांव के लोग बैंक तक नहीं पहुंच पाते हैं. इस पहल ने ऐसी तमाम परेशानियों और समस्याओं को सुलझाने की दिशा में एक राह दिखाने का प्रयास किया है. राज्य स्तरीय बैंकर्स कमिटी की बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री रघुवर दास ने इस वित्तीय वर्ष में 2000 बैंकिग कॉरस्पोंडेंट सखी की नियुक्ति करने का आदेश दिया है. वहीं, सभी बैंक के अधिकारियों को इस योजना से जुड़ने का निर्देश दिया. साथ ही बीसी सखी द्वारा ग्रामीण परिवारों के घर तक बैंक को पहुंचाने की पहल की सराहना भी की. ग्रामीण विकास विभाग के तत्कालीन अपर मुख्य सचिव एनएन सिन्हा ने इस पहल के लिए सखी मंडल की बहनों को धन्यवाद भी दिया. उन्होंने कहा कि बैंकिंग व्यवस्था को गांव के नजदीक ले जाना और इसमें सखी मंडल की ही चयनित सदस्यों को बैंक कॉरस्पोंडेंट बना कर इसे आगे बढ़ाते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे ग्रामीणों को मिले. झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के सीइओ परितोष उपाध्याय ने कहा कि दीन दयाल अंत्योदय योजना-एनआलएलएम के तहत गरीब महिलाओं को आजीविका से जोड़ने की कोशिश की जाती है. इसके लिए सखी मंडलों को सस्ता ऋण देने की भी व्यवस्था. लेकिन, बैंक से लोगों की दूरी इस मिशन की रफ्तार को धीमी करती रही है. ऐसे में सरकार को बीसी सखी से काफी उम्मीदें हैं.

सखी मंडल से बैंकिंग सखी कॉरस्पोंडेंट का सफर

झारखंड के बेड़ो प्रखंड के पतरा टोली गांव की रहनेवाली कनक लता टोप्पो आज बैंकिंग सखी कॉरस्पोंडेंट हैं. कनक लता प्रगति महिला सखी मंडल की सदस्य है. कनक लता का चयन पहले तो सखी मंडल के द्वारा किया गया. फिर विशेषज्ञों की टीम ने कनक लता के बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट के रूप में चयन पर अपनी मुहर लगा दी. चयन के बाद कनक को बैंकिग सेवाओं से जुड़े कई तरह का प्रशिक्षण दिया गया. कनक लता टोप्पो को बीसी सखी के रूप में प्रशिक्षित कर उनको पीओएस मशीन भी उपलब्ध कराया गया. वर्तमान में कनक झारखंड ग्रामीण बैंक की बीसी सखी के रूप में काम कर रही है और वित्तीय/ बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण लोगों तक पहुंचा रही है. कनक ने कड़ी मेहनत और लगन से हर महीने लाखों का बैंकिंग ट्रांजेक्शन कर रही है. वहीं, जून माह में कनक ने 2,77,350 रुपये का ट्रांजेक्शन किया.

(लेखक झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी में प्रोग्राम मैनेजर कम्युनिकेशन हैं). ❑

नयी आइएएस ने देखा ग्रामीण महिलाओं में बदलाव

झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलएलपीएस ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में जुटी है. अब केंद्र के ग्रामीण विकास मंत्रालय में जो भी अधिकारी नियुक्त हो रहे हैं, उन्हें पहले झारखंड भेजा जाता है. झारखंड आकर ये अधिकारी राज्य की ग्रामीण महिलाओं में हो रहे बदलाव को देखते हैं. छत्तीसगढ़ कैडर की आइएएस अधिकारी नुपूर राशि पन्ना भी झारखंड आयी. यहां पर जेएसएलपीएस के द्वारा किये जा रहे कार्यों को देखा. राजधानी रांची आने के बाद नुपूर राशि पन्ना अनगड़ा, जानुम व गेदलसूद गयीं. वहां जाकर महिलाओं से मुलाकात की. महिला समूहों की हर गतिविधियों को जाना और महिला समूह के सदस्यों से बातचीत भी की. महिला समूह के द्वारा किये जा रहे कार्यों को भी देखा. ग्राम संगठन किस तरह से कार्य करता है, उनको समझने का प्रयास किया. नुपूर कहती हैं कि झारखंड की ग्रामीण महिलाओं में आया बदलाव विकास को परिभाषित कर रहा है. पहले काफी पढ़ा और सुना था, लेकिन विश्वास नहीं होता था. अब अपने आंखों से देखने व ग्रामीण महिलाओं से बात करने और उनकी सफलता को जानने के बाद यह एहसास हो गया कि झारखंड में विकास की बयार बहने लगी है. ग्रामीण महिलाओं में सकारात्मक बदलाव हुआ है. नुपूर कहती हैं कि पहले की अपेक्षा महिलाओं में हर क्षेत्र में बदलाव हुआ है. महिलाएं सिर्फ आत्मनिर्भर नहीं हुई है, बल्कि कई महत्वपूर्ण चीजों को लेकर जागरूक भी हुई हैं. साफ-सफाई से लेकर रहन-सहन सब चीजों में एक व्यापक बदलाव दिखता है. महिलाएं पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वच्छता पर जोर दे रही हैं. खुद साफ- सफाई पर विशेष जोर देती है. शिक्षा की बात करें, तो महिलाओं में शिक्षा को लेकर जागरूकता आयी है. सभी महिलाएं अब अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने का प्रयास कर रही है. यह बदलाव एक क्रांति की तरह है, क्योंकि जैसे-जैसे समाज में शिक्षा बढ़ेगी महिलाओं की स्थिति में और भी सुधार आयेगा. ❑

सखी मंडल की सदस्यों के साथ नुपूर राशि पन्ना.

छोटी बचत से महिलाओं में आया सार्थक बदलाव : नुपूर

नुपूर राशि पन्ना बोकारो जिले की रहनेवाली और भारतीय प्रशासनिक सेवा 2015 के छत्तीसगढ़ कैडर की आइएएस अधिकारी हैं. वे कहती हैं कि महिला समूहों से जुड़ कर महिलाओं ने बचत करना भी सीख लिया है. छोटी- छोटी बचत महिलाओं के जीवन में सार्थक बदलाव ला रहा है. इसी बचत से महिलाएं बड़ी पूंजी जमा कर रही हैं और काम करते हुए घर-परिवार की रोजी-रोटी कमाने में अहम भूमिका निभा रही है. सखी मंडल की दीदियों में आत्मविश्वास बढ़ा है. प्रशिक्षण मिलने के बाद वो विभिन्न चीजों को लेकर काफी जागरूक भी हुई है. महिलाओं में आत्मनिर्भरता आयी. घर की दहलीज से बाहर कदम रखने का आत्मविश्वास आया. नुपूर कहती हैं कि अगर आप किसी को खाना देते हैं, तो आप एक वक्त के लिए उसका पेट भरते हैं, लेकिन अगर आप किसी को शिक्षा देते हैं, तो उसमें आत्मविश्वास भरते हुए जीवन भर रोटी कमा कर खाने की शक्ति देते हैं. पहले जो महिलाएं घर के सदस्यों के सामने कुछ बोलने में झिझकती थी, वो अब बिना झिझक के ग्रामसभा में बोल रही है, जो साफ संकेत है कि झारखंड की महिलाएं बदल रही हैं.